बड़े लोगों का बचपन

अल्बर्ट आइंस्टीन - महान वैज्ञानिक

सैनिकों को मार्च करते हुए देखकर अल्बर्ट रो पड़ा. उसकी दाई उसे परिवार की गाड़ी में म्यूनिख के आसपास ड्राइव के लिए ले गई थी. उसने सोचा था कि अल्बर्ट को वर्दी पहने सैनिकों को मार्च करते देखकर मज़ा आएगा.

"वे गरीब लोग हैं," उसने घर आकर अपनी माँ से कहा, "वे मार्च बंद नहीं कर सकते. उन्हें आगे और आगे ही जाना होगा, भले ही उनके पैर दुःख रहे हों. और साथ में एक आदमी हर समय उन पर चिल्ला रहा था!"

अल्बर्ट के परिवार में कोई किसी पर नहीं चिल्लाता था. उसकी माँ कोमल और दयालु थीं और उसके पिता अल्बर्ट के साथ खेलने और उसकी बात सुनने को हमेशा तैयार रहते थे.

हर शनिवार (यहूदी छुट्टी के दिन) एक गरीब रूसी छात्र उनके साथ रात का खाना खाने आता था. वो अल्बर्ट से ऐसे बात करता था जैसे अल्बर्ट कोई बड़ा व्यस्क हो. उसने अल्बर्ट को विज्ञान पर आसान पुस्तकों का एक सेट भेंट किया.

पहले तो परिवार को अल्बर्ट की चिंता थी. एक बच्चे के रूप में उसे बच्चों की कविताओं या बच्चों के खेलों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, जैसे कि उसकी बहन को थी. चार साल की उम्र तक (1883 में) वो ठीक से बात तक नहीं कर सकता था. लोगों को लगता था कि कहीं वो मानसिक रूप से पिछड़ा तो नहीं था. लेकिन एक बार जब उसने बोलना शुरू किया, तो उन्हें पता चला कि वो एकदम ठीक था!

उसका पसंदीदा शब्द था "क्यों?"

"कम्पास की सुई हमेशा उत्तर की ओर ही क्यों इशारा करती है?"

"हमें स्कूल में ऐसी चीजें क्यों सीखनी पड़ती हैं जो हमें समझ में नहीं आती हैं?"

अल्बर्ट के "क्यों?" ने उसे स्कूल में परेशानी में डाल दिया क्योंकि वहां पर शिक्षक उसके पिता की तरह धैर्यवान नहीं थे. वहां विद्यार्थियों को रट कर सीखना और चुप रहना पड़ता था.

अल्बर्ट को स्कूल से नफरत थी. कारण जाने बिना कुछ करना उसे बहुत अन्यायपूर्ण लगता था. यही कारण था कि उसे सैनिकों के लिए इतना खेद महसूस हुआ. सैनिक वापस जवाब तक नहीं दे सकते थे. उसकी मां को संगीत से प्यार था. अल्बर्ट ने देखा कि जब माँ पियानो बजाती थी तो वो कितनी खुश होती थीं, उसने सोचा कि वो भी एक वाद्ययंत्र बजाना सीखेगा. उसने वायलिन बजाने से शुरुआत की, लेकिन उसकी संगीत की शिक्षा निराशाजनक रही. फिर उसने मोजार्ट का संगीत सुना और उसके बाद उसने वायलिन का भरपूर आनंद लिया. बाद में वो उसका पसंदीदा मनोरंजन बन गया.

मिस्टर आइंस्टीन का अपने भाई जैकब के साथ साझेदारी में एक इंजीनियरिंग का व्यवसाय था. जैकब ने एक दिन अल्बर्ट को कुछ बीजगणित पढ़ाया, और अंत में अल्बर्ट को कुछ ऐसा मिला जिससे वास्तव में उसकी रुचि जागृत हुई. बाद में, जब एक लड़के ने उसे ज्यामिति की एक किताब दी, तो वो दौड़कर घर गया ताकि वो उसे जल्दी से पढ़ना शुरू कर सके. जब वो 12 वर्ष का था, तो उसे गणित की पुस्तकों में वही आनंद मिलता था जो दूसरे लड़कों को साहसिक कहानियों में मिलता था.

जर्मनी में जिम्नेजियम, एक उन्नत व्याकरण स्कूल होता है. म्युनिख का जिम्नेजियम पूरे देश में प्रसिद्ध था, लेकिन जब अल्बर्ट वहाँ गया, तब भी उसे वो शिक्षा नहीं मिली जो वो चाहता था. उसे हर दिन ग्रीक और लैटिन रटने में घंटों बर्बाद करना पड़ते थे, जबकि उसे केवल गणित और साहित्य विषय पसंद थे. उसे गणित पसंद थी क्योंकि वे उसमें बहुत अच्छा था, और साहित्य क्योंकि उसे पढ़ाने वाला मास्टर लड़कों से अच्छा बर्ताव करता था.

जब अल्बर्ट अभी भी जिम्नेजियम में था तब पिता का व्यवसाय फेल हो गया. फिर पिता ने धंधे को बेचने का फैसला किया और वे इटली में मिलान शहर में चले गए. अल्बर्ट को अपना कोर्स पूरा करने और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए म्यूनिख में ही रहना पड़ा. वो केवल 14 वर्ष का था और उसे अपने परिवार की बहुत याद आती थी. लगभग हर दिन उसे अपने शिक्षकों के साथ बहस करने या किसी नियम को भूलने के लिए स्कूल में सजा मिलती थी.

एक दिन प्रधानाध्यापक ने उसे बुलाया. "आइंस्टीन," उन्होंने उससे कहा, "मुझे लगता है कि यही बेहतर होगा कि तुम जिम्नेजियम छोड़ दो. तुम यहां कभी भी फिट नहीं होगे; तुम एकदम अनुशासित हो."

जब अल्बर्ट इटली पहुंचे तो किसी को भी आश्चर्य नहीं हुआ. उसने एक दिन अपने पिता से कहा: "मैं अब जर्मन या यहूदी नहीं बनना चाहता हूँ. मैं किसी समूह से संबंधित नहीं होना चाहता. मैं एक साधारण इंसान बनना चाहता हूं."

यह सुनकर पिता न तो नाराज हुए और न ही खुश. वो जानते थे कि उनका बेटा एक असाधारण व्यक्ति बनेगा, और उन्होंने अल्बर्ट से कहा कि वो वही करे जो उसे अच्छा लगे. इस बीच, वो कुछ समय के लिए स्विट्जरलैंड के एक स्कूल में गया और फिर बाद में ज्यूरिख पॉलिटेक्निक में पढ़ा. तब एक साल के लिए अल्बर्ट उस तरह के स्कूल में गया जिसका उसने हमेशा सपना देखा था, जहाँ छात्र उन विषयों को पढ़ सकते थे, जिसमें वे रुचि रखते थे और हर नए विचार पर खुशी-खुशी चर्चा करते थे.

अल्बर्ट अपने दोस्तों के साथ पहाड़ों में घंटों टहलता था. एक कहानी के अनुसार एक दिन चर्चा करने में वो इतना व्यस्त था कि वो एक पहाड़ी रास्ते के किनारे से फिसल गया.

सौभाग्य से, कुछ रोडोडेंड्रोन की झाड़ियों ने उसे बचा लिया - नहीं तो अल्बर्ट आइंस्टीन के बारे में किसी ने नहीं सुना होता.